पुरोवाक्

नागार्जुन आधुनिक हिन्दी साहित्य के बहुआयामी प्रतिभा के रचनाकार हैं । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में नागार्जुन के उपन्यास साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है । प्रथम अध्याय में नागार्जुन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन-विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है क्योंकि रचनाओं की वास्तविक परख और निरीक्षण के लिए लेखकीय व्यक्तित्व एवं परिवेश की जानकारी अनिवार्य है । व्यक्तित्व एवं परिवेश के अलावा लेखक की रचना-प्रक्रिया पर भी ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है । इसलिए मैं ने पहले अध्याय में नागार्जुन के जीवन परिवेश, शिक्षा, उनपर पडे साहित्यिक प्रभाव, रचना प्रक्रिया, साहित्यिक मान्यतायें आदि का विश्लेषण प्रस्तुत किया है ।

दूसरे अध्याय में उपन्यास और यथार्थ, हिन्दी उपन्यास की परंपरा, सामाजिक यथार्थ और उपन्यासों में सामाजिक जीवन का वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रस्तुत है । उपन्यास और सामाजिक यथार्थ दोनों का उद्भव आधुनिक काल में एक साथ ही हुआ है । सामाजिक यथार्थ को उसकी पूर्णता एवं समग्रता के साथ अभिव्यक्ति प्रदान करने को ही उपन्यास का विकास हुआ है । हिन्दी उपन्यास को देखने पर ज्ञात होता है कि हिन्दी उपन्यास अपने आरंभ से ही सामाजिक यथार्थ की धरातल पर ही चलता रहता है । और उसका मूल स्वर सामाजिक ही है । इस अध्याय में नागार्जुन की युगीन, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का संदर्भगत अध्ययन का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । ये युगीन संदर्भ उनके

उपन्यासों का प्रेरक तत्व हैं । विभिन्न संदर्भों का अध्ययन करते समय देखा गया है कि उनके द्वारा उपन्यासकार के व्यक्तित्व निर्माण में कहाँ तक और किस प्रकार सहयोग मिला है और उनकी रचनाओं में कहाँ तक विद्यमान हुआ है ।

तीसरे अध्याय में उपन्यासकार की उन रचनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है जो कि सामाजिक संदर्भों से संबंधित है । समकालीन समाज के सूक्ष्म एवं आंतरिक संदर्भों को उन्होंने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है । इसमें शहरी जीवन की विडम्बना, ग्रामीण जीवन का यथार्थ, उच्च वर्ग का अत्याचार, मध्यवर्ग की द्विधात्मक स्थिति, निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति आदि पर प्रकाश डाला गया है । मिथिलांचल के जन जीवन को अपनी अंतरंगता से पहचाननेवाली नागार्जुन की दृष्टि यहाँ उजागर होती है ।

चौथे अध्याय के अंतर्गत नागार्जुन के राजनीतिक संदर्भों की रचनाएँ आई हैं । इसमें विभिन्न राष्ट्रीय आन्दोलन, शासन व्यवस्था, नेता वर्ग आदि के प्रसंग अत्यन्त प्रमुख हैं । राजनैतिक दुष्चक्र, राजनैतिक तंत्र के दिखावे एवं राजनैतिक व्यवस्था के दुष्परिणाम आदि का पर्दाफाश करनेवाली नागार्जुन की पैनी दृष्टि उद्घाटित हुई है । उनकी रचनाओं का प्रबल क्षेत्र राजनीति ही है । इसलिए राजनीति के चित्रण में जिस सूक्ष्मता और प्रामाणिकता का परिचय मिलता है, उसी का स्पष्ट अध्ययन इस अध्याय में हुआ है ।

पाँचवें अध्याय में नारी की समस्याओं पर सविस्तार विचार विश्लेषण हुआ है । नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन से संबंधित अनेक सामाजिक समस्याओं - विधवाओं की दशा, अनमेल विवाह, वेश्या जीवन, विवाह-विच्छेद आदि का चित्रण करते हुए पारिवारिक जीवन में प्रकट होनेवाले संबंधों का यथार्थवादी दृष्टि से विश्लेषण किया है । उन्होंने नारी के स्वाभिमान, प्रतिशोध भाव, चरम सहनशीलता, मातृत्व, ममत्व, मर्यादा इन सब पर प्रकाश डाला है ।

छठाँ अध्याय नागार्जुन के शिल्प विधान पर आधारित है । शिल्प की विवेचना करके नागार्जुन के उपन्यास साहित्य की शिल्पगत विशेषताओं पर विचार किया गया है । उनके औपन्यासिक शिल्प में कथानक, पात्र संकल्पना और भाषिक संरचना मुख्य हैं । नागार्जुन के औपन्यासिक शिल्प आडम्बरविहीन स्वाभाविक है । एक प्रकार से वह परंपरागत औपन्यासिक शिल्प ही है । उसमें वर्णन की प्रमुखता है । नागार्जुन की अनलंकृत शिल्प पद्धति विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष और श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर डा. विजयनजी के निर्देशन में संपन्न हुआ है । निर्देशक के रूप में डा. विजयनजी ने जिस प्रकार मेरी सहायता की है उसे मैं शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर सकूँगी । उन्होंने मेरे इस शोध प्रबन्ध के सिलसिले में

जो मार्गदर्शन दिया है, उससे मैं अपना शोधकार्य निश्चित समय में पूरा कर सकी । उनका यह ऋण मैं कभी नहीं चुका पाऊँगी और चुकाना भी नहीं चाहती । उस ऋण में रहना मेरे लिए गौरव की बात होगी । प्रबन्ध में जो कुछ अच्छा है, वह उनके मार्गदर्शन का परिणाम है । जो त्रुटि या कमी है, वह मेरी अपनी ही देन है ।

अब रहे मेरे घर के लोग - माँ, पति और बच्चे, जिन्हें मेरे शोध प्रबन्ध की चिन्ता सताती रहती । सभी के सहयोग से मेरा यह काम सफल हो गया । प्रबन्ध के टाईपिंग करनेवाली जयन्ती के प्रति भी मैं आभारी हूँ । एम.ए.कालेज के हिन्दी विभाग के दूसरे अध्यापकों, कार्यालय के कर्मचारियों, लाइब्रेरी के अधिकारियों एवं मेरे प्रिय मित्रों के प्रति भी कृतज्ञता अर्पित करती हूँ । उन समस्त विद्वज्जनों के प्रति भी मैं हार्दिक कृतज्ञता अर्पित करती हूँ, जिनके ग्रन्थों से मैं ने इस शोध कार्य में सहायता ली है । ज्ञात और अज्ञात रूप से जिन्होंने मेरी सहायता की है, उन सबको मैं आभारी हूँ ।

मैं ने अपने अध्यापकीय और पारिवारिक जीवन की व्यस्तताओं के बीच में यह शोधकार्य पूरा किया है । इस प्रबन्ध को

निर्दोष और संपूर्ण रूप में प्रस्तुत कर सही, ऐसा मेरा दावा नहीं है । फिर भी इस शोध प्रबन्ध को इस रूप में ही सही, प्रस्तुत कर मैं आत्मसंतोष अनुभव करती हूँ और सुधी जनों की आशीर्वाद की प्रार्थना करती हूँ ।

Holy

मोली. एम. पी.

हिन्दी विभाग
श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय
कालडी

तारीख : 25-06-98.